



## KVS – PRT

Special Educator

केन्द्रीय विद्यालय संगठन (KVS)

भाग - 3

खंड A (अनिवार्य)

उभरते भारतीय समाज में शिक्षा



# INDEX

<b>S.N.</b>	<b>Content</b>	<b>P.N.</b>
<b>अध्याय – 3</b>		
<b>उभरते भारतीय समाज में शिक्षा</b>		
1.	शिक्षा का अर्थ, परिभाषा, प्रकृति और विशेषताएँ	1
2.	शिक्षा के उद्देश्य: ऐतिहासिक, समकालीन और 21वीं सदी के परिप्रेक्ष्य	7
3.	एजुकेशन एजेंसियां: फॉर्मल, नॉन-फॉर्मल और इनफॉर्मल; परिवार, स्कूल, कम्युनिटी, मीडिया और उभरती एजेंसियां	13
4.	शिक्षा के कार्य (सामाजिक, सांस्कृतिक, नैतिक, राजनीतिक, आर्थिक) और सामाजिक परिवर्तन के साधन के रूप में शिक्षा	17
5.	शिक्षा के तरीके और सरकारी और गैर-सरकारी एजेंसियों की भूमिका	22
6.	मुख्यधारा, समावेशी और विशेष स्कूली शिक्षा	29
7.	घर से पढ़ाई और शिक्षा में सरकारी और गैर-सरकारी एजेंसियों की भूमिका	35
8.	एजुकेशनल फिलॉसफी और टीचिंग पर उनके असर	42
9.	भारतीय शैक्षिक विचारक और उनके शैक्षिक विचार	47
10.	पश्चिमी शैक्षिक दार्शनिक और उनके योगदान	52
11.	मोटेसरी, फ्रोबेल, पियाजे: बाल-केंद्रित और प्रारंभिक बचपन के शैक्षिक दृष्टिकोण	58
12.	सीखने के बुनियादी सिद्धांत: व्यवहारवादी, संज्ञानात्मक, मानवतावादी और रचनात्मक दृष्टिकोण	63
13.	सीखने के तरीके, अलग-अलग तरह की समझ और अलग-अलग तरह के सीखने वाले	70
14.	सीखने को प्रभावित करने वाले कारक	76
15.	ध्यान दें: प्रकार, कारक, समस्याएं और क्लासरूम मैनेजमेंट	85
16.	परसेप्शन: प्रिंसिपल, टाइप, प्रॉब्लम और एजुकेशनल इम्प्लीकेशन	91
17.	मेमोरी: टाइप, स्टेज, प्रॉब्लम और स्ट्रेटेजी	98
18.	इंटेलिजेंस: ध्योरी, असेसमेंट, गिफ्टेडनेस और डिसेबिलिटी रिलेशनशिप	105
19.	मोटिवेशन: टाइप, ध्योरी, क्लासरूम स्ट्रेटेजी और SEN सपोर्ट	112
20.	कक्षा प्रबंधन और समावेशी कक्षा अभ्यास	119
21.	शिक्षा पर संवैधानिक प्रावधान	127
22.	बच्चों को मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009	132
23.	आरपीडब्ल्यूडी अधिनियम 2016 में शैक्षिक प्रावधान	138
24.	आज्ञादी के बाद के शिक्षा आयोग (भाग 1)	143
25.	राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1968 और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986	148
26.	कार्यवाही कार्यक्रम (पी.ओ.ए.) 1992	154
27.	राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020: विजन और संरचनात्मक सुधार	160
28.	एनईपी 2020: समावेश, समानता, विशेष आवश्यकताएं और शासन	166
29.	अंतिम संशोधन	172

# 3 CHAPTER

## उभरते भारतीय समाज में शिक्षा

### शिक्षा का अर्थ, परिभाषा, प्रकृति और विशेषताएँ

#### 1. परिचय - शिक्षा क्या है?

- एजुकेशन सबसे पुराने और सबसे बुनियादी इंसानी कामों में से एक है। हर समाज ने - चाहे पुराना हो या नया, पारंपरिक हो या टेक्नोलॉजी में एडवांस्ड - अगली पीढ़ी को ज्ञान, वैल्यू, स्किल, परंपराएं और प्रॉब्लम सॉल्व करने की क्षमता देने के लिए सिस्टम बनाए हैं। एजुकेशन लोगों को समाज का प्रोडक्टिव, जिम्मदार, सोचने-समझने वाला सदस्य बनाती है; यह ऐसे जानकार नागरिक बनाकर भी समाज को आकार देती है जो आर्थिक विकास, सांस्कृतिक बचाव, इनोवेशन और सामाजिक मेलजोल में योगदान देते हैं।

#### शिक्षा का अध्ययन निम्नलिखित का पता लगाता है:

- लोग कैसे सीखते हैं
- समाज संस्कृति को कैसे प्रसारित करता है
- इंसान की क्षमता कैसे विकसित होती है
- मूल्य, अनुशासन, ज्ञान और कौशल कैसे बनते हैं
- सीखने से सामाजिक बदलाव कैसे होता है

इस तरह, शिक्षा एक प्रोसेस और नतीजा, एक साधन और एक लक्ष्य दोनों है।

#### 2. शिक्षा का अर्थ

“शिक्षा” शब्द आया है:

- लैटिन शब्द एजुकेयर → पोषण करना, पालना, बढ़ा करना
- लैटिन शब्द एड्यूसेरे → बाहर निकालना, संभावना को सामने लाना
- लैटिन शब्द एजुकेटम → शिक्षण या प्रशिक्षण का कार्य

ये कई जड़ें दो मुख्य पहलुओं को दिखाती हैं:

- शिक्षा एक पालन-पोषण की प्रक्रिया के रूप में (सामूहिक, संरचित)
- शिक्षा अंदरूनी क्षमता को बाहर निकालने की एक प्रक्रिया के रूप में (व्यक्तिगत, मानवतावादी)

इस प्रकार, शिक्षा का अर्थ दोनों हैं:

- बाहर से विकास (बाहरी प्रभाव)
- अंदर से विकास (अंतर्निहित क्षमताएँ)

इसलिए शिक्षा सिर्फ़ स्कूलिंग तक ही सीमित नहीं है; इसमें वे सभी अनुभव शामिल हैं - फ़ॉर्मल और इनफ़ॉर्मल - जो सोच, व्यवहार, ज्ञान और पर्सनेलिटी को आकार देते हैं।

#### 3. शिक्षा की परिभाषाएँ (परीक्षा-महत्वपूर्ण)

##### 1. स्वामी विवेकानन्द

- “शिक्षा मनुष्य में पहले से मौजूद पूर्णता की अभिव्यक्ति है।”
- अर्थ: शिक्षा अंतर्निहित क्षमता को बाहर निकालती है।

##### 2. महात्मा गांधी

- “शिक्षा से मेरा तात्पर्य बच्चे और मनुष्य के शरीर, मन और आत्मा से सर्वोत्तम गुणों को बाहर निकालना है।”
- शिक्षा समग्र है: शारीरिक + मानसिक + नैतिक + आध्यात्मिक।

##### 3. जॉन डेवी

- “शिक्षा अनुभवों के निरंतर पुनर्निर्माण की प्रक्रिया है।”
- शिक्षा लगातार चलने वाली, अनुभव पर आधारित, लोकतात्रिक और समस्या-समाधान वाली होती है।

##### 4. प्लेटो

- शिक्षा शरीर और आत्मा का विकास करती है।
- कैरेक्टर बनाना ज़रूरी है।

##### 5. अरस्तू

- “शिक्षा एक स्वस्थ शरीर में एक स्वस्थ दिमाग का निर्माण है।”
- संतुलित विकास: बौद्धिक, नैतिक, शारीरिक।

## 6. पेस्टालोज़ी

- शिक्षा नैचुरल, प्रोग्रेसिव और दिमाग, दिल और हाथ पर आधारित होती है।

## 7. आरएस पीटर्स

- शिक्षा अच्छे कामों की शुरुआत है।

## सभी परिभाषाओं का सारांश

शिक्षा जीवन भर चलने वाली, गतिशील, निरंतर और समग्र विकास की प्रक्रिया है:

- ज्ञान
- कौशल
- मान
- व्यवहार
- व्यक्तित्व
- योग्यताएँ
- निर्णय
- बुद्धि
- सामाजिक जिम्मेदारी

यह प्रक्रिया और उत्पाद, औपचारिक और अनौपचारिक, व्यक्तिगत और सामाजिक, मनोवैज्ञानिक और सांस्कृतिक दोनों हैं।

## 4. शिक्षा का दायरा

शिक्षा मानव विकास के सभी क्षेत्रों को कवर करती है:

- कॉग्निटिव (ज्ञान, सोच, प्रॉब्लम सॉल्विंग)
- इमोशनल (भावनाएं, नज़रिया, मूल्य)
- शारीरिक (फिटनेस, मोटर स्किल्स)
- सामाजिक (रिश्ते, नागरिकता)
- नैतिक (नैतिकता, विवेक)
- आध्यात्मिक (अंदरूनी विकास, अर्थ)
- वोकेशनल (आजीविका के लिए स्किल्स)



मॉडर्न एजुकेशन का विस्तार इस तरह है:

- डिजिटल साक्षरता
- पर्यावरण जागरूकता
- वैश्विक नागरिकता
- समावेशी मूल्य
- उद्यमशीलता कौशल

इस तरह शिक्षा मल्टीडाइमेंशनल है।

## 5. शिक्षा का स्वरूप (परीक्षाओं के लिए बहुत महत्वपूर्ण)

- शिक्षा का नेचर उसकी अंदरूनी खासियतों को बताता है। इसे समझने से टीचिंग, करिकुलम डेवलपमेंट, पॉलिसी और स्कूल मैनेजमेंट में मदद मिलती है।

### 5.1 शिक्षा एक आजीवन प्रक्रिया है

- शिक्षा जन्म से शुरू होती है (जन्म से पहले भी - जन्म से पहले की सीख) और मृत्यु तक जारी रहती है।
- सीखना स्कूल के साथ खत्म नहीं होता; बड़े लोग अनुभवों, समुदाय, काम की जगह और खुद से पढ़ाई करके सीखते हैं।

### 5.2 शिक्षा एक सतत और गतिशील प्रक्रिया है

यह लगातार इन बदलावों के साथ बदलता रहता है:

- समाज
- प्रौद्योगिकी
- अर्थव्यवस्था
- संस्कृति
- ज्ञान

इसलिए, करिकुलम और पढ़ाने के तरीकों को भी बदलना होगा।

### 5.3 शिक्षा बाइपोलर और ट्रिपोलर है

द्विधुक्ती प्रक्रिया (एडम्स)

- टीचर → एजुकेटर
- शिक्षार्थी → शिक्षित

उनके बीच का रिश्ता विकास को आकार देता है।

## त्रिधुवीय प्रक्रिया (ड्रेवर)

शिक्षा में शामिल हैं:

- शिक्षक
- शिक्षार्थी
- पर्यावरण

माहौल (फिजिकल, साइकोलॉजिकल, सोशल) एक बड़ी भूमिका निभाता है।

## 5.4 शिक्षा सामाजिक है

- एक व्यक्ति समाज के माध्यम से इंसान बनता है।

शिक्षा से ये बातें पता चलती हैं:

- संस्कृति
- परंपराएँ
- सीमा शुल्क
- मानदंड
- मान

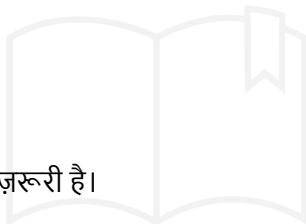
शिक्षा लोगों को सामाजिक भागीदारी के लिए तैयार करती है।

## 5.5 शिक्षा मनोवैज्ञानिक है

सीखना इस पर निर्भर करता है:

- ब्याज
- ध्यान
- स्मृति
- बुद्धिमत्ता
- व्यक्तित्व
- भावनाएँ

टीचरों के लिए बच्चों की साइकोलॉजी को समझना ज़रूरी है।



## 5.6 शिक्षा बाल-केंद्रित है

मॉडर्न एजुकेशन इन पर फोकस करती है:

- शिक्षार्थी की ज़रूरतें
- योग्यताएँ
- गति
- क्षमता
- रुचियाँ

टीचर गाइड और फैसिलिटेटर बन जाता है।

## 5.7 शिक्षा समग्र है

होलिस्टिक डेवलपमेंट में शामिल हैं:

- बौद्धिक
- नैतिक
- भावनात्मक
- सामाजिक
- शारीरिक
- सौदर्यबोध
- आध्यात्मिक आयाम

## 5.8 शिक्षा एक सोची-समझी और प्लान की गई एक्टिविटी है

यह इस प्रकार है:

- उद्देश्य
- उद्देश्य
- पाठ्यक्रम
- विधियाँ
- मूल्यांकन

फॉर्मल एजुकेशन सिस्टमैटिक और स्ट्रक्चर्ड होती है।

### 5.9 शिक्षा औपचारिक और अनौपचारिक दोनों है

- औपचारिक → स्कूल, संस्थान
- अनौपचारिक → परिवार, मीडिया, समाज
- दोनों ही ग्रोथ पर असर डालते हैं।

### 5.10 शिक्षा मूल्य-उन्मुख है

शिक्षा से बढ़ावा मिलता है:

- अनुशासन
- नैतिकता
- नागरिकता
- टीमवर्क
- सहानुभूति
- सहनशीलता
- शांति

एक अच्छे समाज के लिए मूल्य ज़रूरी हैं।

### 5.11 शिक्षा सामाजिक परिवर्तन का एक एजेंट है

शिक्षा समाज को मॉडर्न बनाने में मदद करती है:

- असमानताओं को कम करना
- महिलाओं को सशक्त बनाना
- लोकतंत्र को बढ़ावा देना
- वैज्ञानिक सोच को सक्षम बनाना
- अंधविश्वास का मुकाबला

### 5.12 शिक्षा विकासात्मक है

शिक्षा छिपी हुई क्षमताओं को विकसित करती है और ये चीज़ें पैदा करती है:

- रचनात्मकता
- नवाचार
- अनुकूलनशीलता

### 5.13 शिक्षा वैश्विक और सार्वभौमिक है

21वीं सदी की शिक्षा बच्चों को वैश्विक मुद्दों से जोड़ती है:

- जलवायु परिवर्तन
- शांति और न्याय
- डिजिटल नागरिकता
- स्थिरता

6. शिक्षा की विशेषताएं (कॉन्सेप्चुअली डीप)

### 6.1 उद्देश्यपूर्ण गतिविधि

शिक्षा का उद्देश्य विकास करना है:

- क्षमता
- चरित्र
- नागरिकता
- उत्पादकता
- सामाजिक जिम्मेदारी

### 6.2 सहकारी और सामाजिक गतिविधि

छात्र इनके ज़रिए सीखते हैं:

- बातचीत
- सहयोग
- चर्चा
- सहयोग
- सामुदायिक भागीदारी

सामाजिक शिक्षा लोकतांत्रिक मूल्यों को मजबूत करती है।

### 6.3 प्रगतिशील और दूरदर्शी

शिक्षा बच्चों को भविष्य की चुनौतियों के लिए तैयार करती है:

- भविष्य की नौकरियाँ
- प्रौद्योगिकी
- सामाजिक परिवर्तन

इसलिए यह डायनामिक होना चाहिए।

### 6.4 बहुविषयक और एकीकृत

शिक्षा अब विषयों को अलग नहीं करती बल्कि जोड़ती है:

- स्टम
- कला
- खेल
- जीवन कौशल
- व्यावसायिक क्षेत्र

NEP 2020 मल्टीडिसिप्लिनरी लर्निंग को ज़ोरदार तरीके से बढ़ावा देता है।

### 6.5 लचीला और समावेशी

शिक्षा को इसके हिसाब से ढलना होगा:

- अलग-अलग सीखने की शैलियाँ
- विविध ज़रूरतें
- विकलांगता
- सांस्कृतिक विविधता

सबको साथ लेकर चलने वाली शिक्षा यह पक्का करती है कि कोई भी बच्चा पीछे न छूटे।

### 6.6 मानवीयकरण प्रक्रिया

शिक्षा विकसित होती है:

- सहानुभूति
- नैतिकता
- श्रम की गरिमा
- दूसरों के प्रति सम्मान

यह लोगों को इंसानियत का एहसास दिलाने वाला और समाज के लिए ज़िम्मेदार बनाता है।

### 6.7 सतत मूल्यांकन

आधुनिक शिक्षा इस बात पर ज़ोर देती है:

- प्रतिक्रिया
- रचनात्मक मूल्यांकन
- आत्म-मूल्यांकन
- पोर्टफोलियो मूल्यांकन

यह जज करने के बजाय सीखने में मदद करता है।

### 6.8 लोकतांत्रिक

शिक्षा सम्मान:

- स्वतंत्रता
- समानता
- न्याय
- भागीदारी
- संवाद

टीचर चर्चा को बढ़ावा देते हैं, तानाशाही निर्देश को नहीं।

### 6.9 विकासात्मक चरणों के आधार पर

करिकुलम इन चीजों से मैच करता है:

- संज्ञानात्मक
- भावनात्मक
- शारीरिक
- नैतिक
- सामाजिक विकास के चरण

(पियाजे, वायगोत्स्की, एरिक्सन पर आधारित)

## 6.10 सार्वभौमिक अधिकार

- शिक्षा एक अधिकार है, कोई खास अधिकार नहीं।
- RTE एक्ट 2009 इसे 6-14 साल के लिए कानूनी हकीकत में बदल देता है।

## 7. 21वीं सदी में भारत में शिक्षा

भारत के एजुकेशनल माहौल में बदलाव आ रहा है, इसकी वजह है:

- वैश्वीकरण
- तीव्र तकनीकी विकास
- बदलते जॉब मार्केट
- सामाजिक आकंक्षाएँ
- एनईपी 2020 सुधार

**21वीं सदी की शिक्षा की मुख्य विशेषताएं**

### 7.1 कौशल-उन्मुख

ध्यान केंद्रित करना:

- आलोचनात्मक सोच
- समस्या-समाधान
- रचनात्मकता
- नवाचार
- कोडिंग, डिज़ाइन थिंकिंग
- उद्यमिता

### 7.2 योग्यता-आधारित शिक्षा

रटने की आदत से आगे बढ़ते हुए:

- महारत
- आवेदन
- वैचारिक समझ

### 7.3 डिजिटल और तकनीकी एकीकरण

का उपयोग:

- आईसीटी
- ई-लर्निंग
- स्मार्ट कक्षाएँ
- AI-आधारित पर्सनलाइज़्ड लर्निंग
- सिमुलेशन

COVID-19 ने डिजिटल शिक्षा को अपनाने में तेज़ी ला दी।



### 7.4 समावेशी और न्यायसंगत शिक्षा

नीतियां सुनिश्चित करती हैं:

- CwSN के लिए एक्सेस
- सामाजिक-आर्थिक रूप से वंचित समूह (SDGs)
- लैंगिक समानता
- बहुभाषी कक्षाएँ

### 7.5 बहुविषयक शिक्षा

- सख्त स्ट्रीम (आर्ट्स, कॉर्स, साइंस) की जगह फ्लेक्सिबिलिटी लाई गई (NEP 2020)।

### 7.6 स्थानीय से वैश्विक परिप्रेक्ष्य

शिक्षा बढ़ावा देती है:

- भारतीय ज्ञान प्रणालियाँ
- पर्यावरण जागरूकता
- वैश्विक नागरिकता

### 7.7 आजीवन सीखना

- अनप्रेडिक्टेबल जॉब मार्केट में लगातार अपस्किलिंग ज़रूरी है।

## 8. शिक्षकों के लिए “शिक्षा की प्रकृति” का अध्ययन करना महत्वपूर्ण है

टीचर्स को यह समझना चाहिए कि एजुकेशन का असली मतलब क्या है क्योंकि:

- यह उनके टीचिंग फिलॉसफी को गाइड करता है
- बच्चों को पूरी तरह से समझने में उनकी मदद करता है
- कक्षा के अभ्यासों को आकार देता है

- अनुशासन के तरीकों को प्रभावित करता है
- पाठ्यक्रम विकल्पों का मार्गदर्शन करता है
- समावेशी, बाल-केंद्रित शिक्षण सुनिश्चित करता है
- आधुनिक शिक्षा सुधारों के साथ सरेखित शिक्षा के नेचर और मकसद को समझे बिना, पढ़ाना मैकेनिकल और बेअसर हो जाता है।

## 9. निष्कर्ष

- एजुकेशन एक होलिस्टिक, लगातार चलने वाली, डायनामिक, सोशल, कंस्ट्रक्टिव और वैल्यू से भरी प्रोसेस है जिसका मकसद इंसानों का हर तरह से विकास करना है। यह लोगों को सिर्फ़ एजाम के लिए नहीं, बल्कि ज़िंदगी के लिए तैयार करती है। एजुकेशन का मतलब, नेचर, मकसद और खासियतों को समझाकर, टीचर ऐसी क्लासरूम बना सकते हैं जो सबको साथ लेकर चलने वाली, डेमोक्रेटिक, इंसानियत वाली और प्रोग्रेसिव हों - जो 21वीं सदी के भारत की ज़रूरतों के हिसाब से हों।

अच्छी शिक्षा लोगों को बदल देती है → बदले हुए लोग एक बेहतर समाज बनाते हैं।

## शिक्षा के उद्देश्य: ऐतिहासिक, समकालीन और 21वीं सदी के परिप्रेक्ष्य

### 1. परिचय - शिक्षा के उद्देश्य क्यों महत्वपूर्ण हैं

- शिक्षा बिना किसी मकसद के काम नहीं है। हर समाज एक मकसद के साथ शिक्षा देता है।

ये मकसद - जिन्हें शिक्षा के लक्ष्य कहा जाता है - तय करते हैं:

- क्या कंटेट पढ़ाया जाना चाहिए
- किन मूल्यों को बढ़ावा दिया जाना चाहिए
- स्टूडेंट्स का असेसमेंट कैसे किया जाना चाहिए
- एक देश किस तरह के नागरिक बनाना चाहता है करिकुलम प्लानर, टीचर, एडमिनिस्ट्रेटर, पॉलिसी बनाने वाले और संस्थानों के लिए एक दिशा बताने वाले का काम करते हैं। लक्ष्य के बिना, शिक्षा मशीनी, बिखरी हुई और बिना दिशा वाली हो जाती है।

भारत में, अपनी सामाजिक विविधता, आर्थिक चुनौतियों और सांस्कृतिक समृद्धि के साथ, शिक्षा के लक्ष्य पीढ़ियों तक देश के शिक्षा में बदलाव को गाइड करते हैं।

### 2. शिक्षा के उद्देश्यों पर ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

- शिक्षा के उद्देश्य समय के साथ विकसित हुए हैं क्योंकि समाज विकसित होते हैं।

#### 2.1 प्राचीन भारतीय शिक्षा के उद्देश्य

- प्राचीन भारत में शिक्षा को आध्यात्मिक, नैतिक और सामाजिक गतिविधि के रूप में देखा जाता था।

वैदिक और उपनिषदिक काल में मुख्य उद्देश्य:

- आत्म-साक्षात्कार (आत्म-ज्ञान)
- चरित्र निर्माण
- नैतिक मूल्यों का विकास
- अनुशासन और आत्म-नियंत्रण
- शास्त्रों का ज्ञान
- परिवार, समाज और राष्ट्र के प्रति कर्तव्य (धर्म)
- आध्यात्मिक विकास (मोक्ष)

गुरु-शिष्य परंपरा में इस बात पर ज़ोर दिया गया:

- विनम्रता
- सेवा
- आज्ञाकारिता
- भक्ति
- आजीवन सीखना

शिक्षा ज्यादातर वैल्यू-लेड थी।

#### 2.2 बौद्ध शिक्षा के उद्देश्य

बौद्ध शिक्षा पर ज़ोर दिया गया:

- करुणा
- नैतिकता
- अहिंसा
- तर्कसंगतता
- आत्म-अनुशासन
- सादा जीवन

सीखना खुद को समझने और दुख कम करने पर केंद्रित है।

वोकेशनल ट्रेनिंग और सोशल पार्टिसिपेशन को भी बढ़ावा दिया गया।

### 2.3 मध्यकालीन काल के उद्देश्य

इस्लामी प्रभाव के तहत, उद्देश्य शामिल थे:

- अरबी/फ़ारसी सीखना
- कुरान और हदीस को समझना
- नैतिक आचरण
- याद करना
- अनुशासन
- प्रशासनिक और व्यावसायिक प्रशिक्षण

शिक्षा विश्वास, अनुशासन और शासन पर केंद्रित है।

### 2.4 औपनिवेशिक काल में शिक्षा के उद्देश्य

ब्रिटिश लोगों ने मॉडर्न शिक्षा इसलिए शुरू की ताकि:

- कलर्क
- प्रशासक
- अंग्रेजी बोलने वाले कार्यबल

इस तरह लक्ष्य बदल गए:

- साक्षरता
- अनुपालन
- लिपिकीय कौशल
- पश्चिमी ज्ञान

हालाँकि, भारतीय सुधारकों ने राष्ट्रीय जागृति के लक्ष्य को फिर से तय किया।

### 2.5 स्वतंत्रता के बाद के लक्ष्य

1947 के बाद भारत को ज़रूरत थी:

- राष्ट्रीय एकीकरण
- लोकतंत्र
- वैज्ञानिक स्वभाव
- आर्थिक प्रगति
- सामाजिक न्याय

इस प्रकार शिक्षा का उद्देश्य था:

- एक आधुनिक लोकतांत्रिक भारत के लिए नागरिक तैयार करना
- सामाजिक असमानताओं को कम करना
- नियोजित आर्थिक विकास का समर्थन
- वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति को बढ़ावा देना

कोठारी कमीशन (1964-66) ने इन लक्ष्यों को मज़बूती से आकार दिया।

### 3. शिक्षा के उद्देश्यों पर दार्शनिक दृष्टिकोण

- अलग-अलग फिलॉसफी स्कूल अलग-अलग मकसद बताते हैं।

#### 3.1 आदर्शवाद

शिक्षा में विकास होना चाहिए:

- नैतिक और आध्यात्मिक मूल्य
- चरित्र
- आत्म-अनुशासन
- सत्य और अच्छाई

#### 3.2 प्रकृतिवाद

उद्देश्य:

- बच्चे का स्वतंत्र, प्राकृतिक विकास
- इंद्रियों और अनुभव से सीखना
- न्यूनतम हस्तक्षेप

#### 3.3 व्यावहारिकता

उद्देश्य:

- गतिविधि के माध्यम से सीखना
- समस्या-समाधान कौशल
- अनुकूलनशीलता
- सामाजिक भागीदारी

मॉडर्न स्कूल प्रैग्मैटिज्म पर बहुत ज़्यादा निर्भर करते हैं।

### 3.4 यथार्थवाद

उद्देश्य:

- वैज्ञानिक ज्ञान
- व्यावहारिक कौशल
- वस्तुनिष्ठ सोच
- अनुशासन

### 3.5 मानवतावाद और अस्तित्ववाद

उद्देश्य:

- व्यक्तित्व
- आत्म-अभिव्यक्ति
- व्यक्तिगत अर्थ-निर्माण
- पसंद और आज़ादी

## 4. शिक्षा के सामान्य उद्देश्य (सार्वभौमिक)

### 1. व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास

• शिक्षा से शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक, नैतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक पहलुओं का विकास होना चाहिए।

### 2. अच्छे नागरिक का विकास

शिक्षा लोगों को इसके लिए तैयार करती है:

- लोकतंत्र में भाग लें
- अधिकारों/कर्तव्यों का सम्मान करें
- कानूनों का पालन करें
- राष्ट्रीय प्रगति में योगदान दें

### 3. सामाजिक दक्षता

सामाजिक जीवन के लिए कौशल:

- संचार
- सहयोग
- सहानुभूति
- सहनशीलता
- अनुकूलनशीलता

### 4. नैतिक और नैतिक विकास

मूल्य विकसित करें:

- ईमानदारी
- ज़िम्मेदारी
- सम्मान
- अखंडता
- करुणा

### 5. सोच और तर्क का विकास

पदोन्नति करना:

- आलोचनात्मक सोच
- तार्किक तर्क
- वैज्ञानिक दृष्टिकोण
- निर्णय लेना

### 6. व्यावसायिक तैयारी

छात्रों को इसके लिए तैयार करना:

- रोजगार
- उद्यमिता
- कुशल कार्यबल

इंडस्ट्री से जुड़ी शिक्षा ज़रूरी है।

## 7. सांस्कृतिक संचरण और समृद्धि

शिक्षा संरक्षित करती है:

- भाषा
- कला
- परंपराएँ
- संस्कृति

लेकिन इसे मॉडर्न ज़रूरतों के हिसाब से भी ढाला गया है।

## 8. सामाजिक परिवर्तन को बढ़ावा देना

शिक्षा को चुनौती देनी चाहिए:

- असमानता
- भेदभाव
- निरक्षरता
- अंधविश्वास

इसे समानता और न्याय को बढ़ावा देना चाहिए।

## 5. शिक्षा के व्यक्तिगत उद्देश्य

- बच्चे को एक व्यक्ति के तौर पर विकसित करने पर ध्यान दें।

### 1. आत्म-साक्षात्कार

- अपनी काबिलियत और कमियों को जानना।

### 2. आत्म-अभिव्यक्ति

- इमोशंस और क्रिएटिविटी दिखाने की आज़ादी।

### 3. स्वतंत्रता और स्वायत्तता

- खुद से फ़ैसले लेने की क्षमता।

### 4. शारीरिक विकास

- हेल्प, फिटनेस, हाइजीन।

### 5. भावनात्मक विकास

- भावनाओं को मैनेज करना, हिम्मत बनाना।

### 6. बौद्धिक विकास

- ज्ञान, सोच, क्रिएटिविटी।

### 7. सौंदर्य विकास

- सुंदरता, कला, संस्कृति की प्रशंसा।

## 6. शिक्षा के सामाजिक उद्देश्य

- शिक्षा समाज की सेवा करती है।

### 1. समाजीकरण

- नियम, मूल्य, रीति-रिवाज सिखाना।

### 2. सामाजिक सामंजस्य

- अलग-अलग ग्रुप्स को एक साथ लाता है।

### 3. सामाजिक दक्षता

- नागरिकों को भूमिकाओं के लिए तैयार करना।

### 4. सामाजिक पुनर्निर्माण

- अन्याय को ठीक करना।

### 5. राष्ट्रीय एकता

- जाति, धर्म, भाषा के बंटवारे को संबोधित करना।

## 7. शिक्षा के लोकतांत्रिक उद्देश्य

भारत जैसे लोकतंत्र में शिक्षा को ये बातें बनाए रखनी चाहिए:

- समानता
- स्वतंत्रता
- बिरादरी
- न्याय
- गरिमा

डेमोक्रेटिक लक्ष्यों में शामिल हैं:

- भागीदारी के लिए प्रशिक्षण
- क्रिटिकल और इंडिपेंडेंट सोच डेवलप करना

- सहयोग को प्रोत्साहित करना
- विविधता का सम्मान करना
- शांति और सहिष्णुता को बढ़ावा देना

NEP 2020 डेमोक्रेटिक सिटिज़नशिप एजुकेशन को मज़बूती से मज़बूत करता है।

## 8. शिक्षा के व्यावसायिक उद्देश्य

- वोकेशनल लक्ष्य युवाओं को रोजगार के लिए तैयार करते हैं।

**भारत की ज़रूरतें:**

- कुशल श्रमिक
- उद्यमिता
- व्यावसायिक प्रशिक्षण
- योग्यता विकास
- स्कूल → वर्कप्लेस को जोड़ना

**स्कूली शिक्षा में ये चीजें शामिल होनी चाहिए:**

- कार्य अनुभव
- कौशल-आधारित गतिविधियाँ
- इंटर्नशिप के अवसर

**एनईपी 2020 में शामिल हैं:**

- ग्रेड 6 से कौशल
- कोडिंग
- बैगलेस दिन
- इंटर्नशिप

## 9. शिक्षा के सांस्कृतिक उद्देश्य

- भारत की समृद्ध विरासत को बचाकर रखना चाहिए।

**शिक्षा में ये होना चाहिए:**

- परंपराओं का संचार
- भाषाओं की रक्षा करें
- कला और साहित्य को बढ़ावा देना
- त्योहारों और रीति-रिवाजों को समझें
- भारतीय ज्ञान प्रणालियों के लिए सम्मान विकसित करना

लेकिन मॉडर्न ज़रूरतों के हिसाब से कल्चर को भी बदलें।

## 10. नैतिक और आधारितिक लक्ष्य

- ज़रूरी है क्योंकि भारतीय समाज नैतिकता को बहुत महत्व देता है।

**शिक्षा को बढ़ावा देना चाहिए:**

- सत्य
- करुणा
- अहिंसा
- आत्म-अनुशासन
- अखंडता

गांधीजी की नई तालीम में नैतिक शिक्षा को सभी तरह की शिक्षा का मूल बताया गया था।

## 11. मानवीय उद्देश्य

**शिक्षा से ऐसे दुनिया भर में ज़िम्मेदार नागरिक बनने चाहिए जो:**

- मानवाधिकारों को महत्व दें
- पर्यावरण की सुरक्षा
- शांति को बढ़ावा देना
- मूल्य समानता
- सभी जीवन रूपों का सम्मान करें

21वीं सदी में ग्लोबल सिटिज़नशिप एजुकेशन की ज़रूरत है।

## 12. शिक्षा के आर्थिक उद्देश्य

- किसी देश का विकास कुशल और जानकार नागरिकों पर निर्भर करता है।

**शिक्षा में योगदान:**

- बेरोजगारी कम करना
- नवप्रवर्तकों का निर्माण
- उत्पादकता बढ़ाना

- उद्यमिता को सक्षम बनाना
- आर्थिक विकास में योगदान

इस प्रकार शिक्षा एक आर्थिक निवेश है।

### 13. शिक्षा के उभरते लक्ष्य (21वीं सदी का भारत)

मॉडर्न समाज को इन चीजों से जुड़े नए लक्ष्यों की ज़रूरत है:

- प्रौद्योगिकी
- वैश्विकरण
- स्थिरता
- नवाचार
- बहुसंस्कृतिवाद

#### 1. डिजिटल साक्षरता

स्टूडेंट्स को ये सब करना होगा:

- ICT उपकरणों का उपयोग करें
- डिजिटल जानकारी का मूल्यांकन करें
- AI और ऑनलाइन लर्निंग प्लेटफॉर्म का इस्तेमाल करें

#### 2. क्रिटिकल और क्रिएटिव सोच

- मुश्किल समस्याओं को हल करने की क्षमता।

#### 3. सहयोग और संचार

- ग्लोबल दुनिया में टीमवर्क ज़रूरी है।

#### 4. अनुकूलनशीलता और लचीलापन

- तेज़ी से बदलते जॉब सेक्टर में एडजस्ट करने की क्षमता की ज़रूरत होती है।

#### 5. भावनात्मक बुद्धिमत्ता (EQ)

- भावनाओं और रिश्तों को मैनेज करना।

#### 6. सस्टेनेबिलिटी और एनवायरनमेंटल रिस्पॉन्सिबिलिटी

समझः

- जलवायु परिवर्तन
- संरक्षण
- नवीकरणीय ऊर्जा

#### 7. वैश्विक नागरिकता

के बारे में जागरूकता:

- मानवाधिकार
- वैश्विक मुद्दे
- सांस्कृतिक विविधता

#### 8. नैतिक डिजिटल व्यवहार

- साइबर सुरक्षा, प्राइवेसी, ज़िम्मेदार ऑनलाइन व्यवहार।

#### 9. आजीवन सीखना

- स्किल्स को लगातार अपडेट करते रहना चाहिए।

### 14. एनईपी 2020 के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य

एनईपी 2020 में ज़ोर दिया गया है:

- समग्र विकास
- योग्यता-आधारित शिक्षा
- लचीलापन
- बहु-विषयक दृष्टिकोण
- समावेशन
- इकिटी
- डिजिटल सशक्तिकरण

मुख्य उद्देश्यों में शामिल हैं:

- बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मकता
- होलिस्टिक डेवलपमेंट: कॉग्निटिव + सोशल + इमोशनल + एथिकल
- भारतीय संस्कृति में जड़ें + वैश्विक दृष्टिकोण

- कौशल विकास और व्यावसायिक प्रशिक्षण
- वैज्ञानिक स्वभाव
- CwSN और SEDGs के लिए समावेशी शिक्षा
- बहुभाषावाद
- 21वीं सदी के स्किल्स (क्रिएटिविटी, क्रिटिकल थिंकिंग, कोलेबोरेशन)
- लचीले, मल्टीडिसिप्लिनरी रास्ते
- गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक समान पहुँच
- टीचर की आजादी और प्रोफेशनल डेवलपमेंट

## 15. व्यक्तिगत बनाम सामाजिक लक्ष्यों में संतुलन

शिक्षा में संतुलन होना चाहिए:

- व्यक्तिगत विकास
- सामाजिक ज़रूरतें
  - व्यक्तिवाद पर बहुत ज्यादा ध्यान → स्वार्थ
  - समाज पर बहुत ज्यादा ध्यान → क्रिएटिविटी का नुकसान
  - संतुलित लक्ष्य → एक मजबूत व्यक्ति बनाना जो समाज में योगदान दे।

## 16. निष्कर्ष

- शिक्षा के लक्ष्य बदलते रहते हैं और लोगों, समाज और देश की उम्मीदों को दिखाते हैं। भारत में, लक्ष्य आध्यात्मिक और नैतिक विकास से → औपनिवेशिक साक्षरता → लोकतांत्रिक राष्ट्र-निर्माण → वैज्ञानिक, व्यावसायिक और वैश्विक क्षमता तक विकसित हुए हैं।

आज, 21वीं सदी में, शिक्षा को:

- स्टूडेंट्स को जाँब और ज़िंदगी के लिए तैयार करना
- मूल्यों और कौशल को बढ़ावा दें
- लोकल कल्चर और ग्लोबल डिमांड में बैलेंस बनाएं
- व्यक्तित्व और सामाजिक सन्दर्भ का समर्थन करें

अच्छी तरह से तय लक्ष्य यह पक्का करते हैं कि शिक्षा मकसद वाली, मतलब वाली, सबको साथ लेकर चलने वाली और आगे की सोचने वाली बनी रहे।

## एजुकेशन एजेंसियां: फॉर्मल, नॉन-फॉर्मल और इनफॉर्मल; परिवार, स्कूल, कम्युनिटी, मीडिया और उभरती एजेंसियां

### 1. परिचय

- पढ़ाई सिफ्ट क्लासरूम की दीवारों के अंदर नहीं होती। एक बच्चे की पढ़ाई कई एजेंसियों से तय होती है - लोग, संस्थाएँ और सोशल स्ट्रक्चर जो सीधे या इनडायरेक्टली उसके विकास पर असर डालते हैं। इन एजेंसियों और उनके खास कामों को पहचानने में मदद मिलती है। यह चैटर तीन तरह की एजुकेशनल एजेंसियों (फॉर्मल, नॉन-फॉर्मल, इनफॉर्मल) का एनालिसिस करता है, मुख्य एजेंसियों (परिवार, स्कूल, कम्युनिटी, मीडिया) पर चर्चा करता है, उनकी ताकत और कमियों को हाईलाइट करता है, और उन्हें इनक्लूसिव स्कूलिंग में इस्तेमाल करने के लिए प्रैक्टिकल गाइडेंस देता है।

### 2. टाइपोलॉजी: फॉर्मल, नॉन-फॉर्मल और इनफॉर्मल एजुकेशन - परिभाषाएँ और मुख्य विशेषताएँ

औपचारिक शिक्षा

- फॉर्मल एजुकेशन एक स्ट्रक्चर्ड, सर्टिफाइड, करिकुलम-बेस्ड सिस्टम है जो मान्यता प्राप्त इंस्टीट्यूशन (स्कूल, कॉलेज, यूनिवर्सिटी) देते हैं। इसमें एक तय सिलेबस, सर्टिफाइड असेसमेंट, ट्रेंड टीचर और एक के बाद एक ग्रेड दिए जाते हैं। फॉर्मल एजुकेशन की खासियतें हैं स्टैंडर्डाइजेशन, रेगुलेटेड कालिटी (कानूनी/बोर्ड के नियम), क्रेडेंशियलिंग और प्रोग्रेसिव लेवल (प्राइमरी → सेकेंडरी → टर्शियरी)। इसके मकसद में कॉन्स्ट्राक्टिव डेवलपमेंट, सोशलाइजेशन, वोकेशनल तैयारी और आगे के मौकों के लिए सर्टिफिकेशन शामिल हैं।

अनौपचारिक शिक्षा

- नॉन-फॉर्मल एजुकेशन में फॉर्मल स्कूल सिस्टम के बाहर ऑर्गनाइज़ेड लर्निंग शामिल है। यह अक्सर फ्लेक्सिबल, स्किल-ओरिएंटेड और खास ग्रुप्स (एडल्ट लिटरेसी, वोकेशनल कोर्स, कंटिन्यूइंग एजुकेशन, कम्युनिटी लर्निंग सेंटर) के लिए टारगेटेड होती है। नॉन-फॉर्मल प्रोग्राम में आमतौर पर स्कूल डिग्री के बराबर फॉर्मल सर्टिफिकेशन नहीं होता है, लेकिन वे लोकल ज़रूरतों, रोज़ी-रोटी के स्किल्स और रेमेडियल लर्निंग के लिए बहुत ज़रूरी होते हैं। वे डिलीवरी-ओरिएंटेड, प्रैक्टिकल और अक्सर शॉर्ट-टर्म होते हैं।

## अनौपचारिक शिक्षा

- इनफॉर्मल एजुकेशन बिना किसी ढांचे के, अचानक होने वाली सीख है जो रोज़मरा की ज़िंदगी में होती है: परिवार में बातचीत, खेल, काम, सोशल मेलजोल, मास मीडिया और कल्चरल हिस्तेदारी। यह लगातार और ज़िंदगी भर चलती है, जो नॉर्म्स, वैल्यूज़, कहानियों और नकल के ज़रिए आगे बढ़ती है। इनफॉर्मल लर्निंग किसी इंस्टीट्यूशन से सर्टिफाइड नहीं होती, लेकिन सोशल स्किल्स, भाषा, वैल्यूज़ और पहचान के लिए ज़रूरी होती है।

### 3. एजेंसियों में अंतर क्यों? - प्रैक्टिकल तर्क

एजेंसी टाइपोलॉजी को समझने से टीचर्स और पॉलिसीमेकर्स को ये करने में मदद मिलती है:

- सही इंटरवेंशन डिज़ाइन करें : जैसे, रिमेडियल प्रोग्राम (नॉन-फॉर्मल) बनाम करिकुलम में बदलाव (फॉर्मल)।
- ताकत का फ़ायदा उठाएँ : क्लासरूम में पढ़ाई को मज़बूत करने के लिए परिवार का सपोर्ट इस्तेमाल करें।
- कमियों को दूर करें : जहां स्कूलों में इंफ्रास्ट्रक्चर की कमी है, वहां कम्युनिटी रिसोर्स का इस्तेमाल करें।
- इंटीग्रेट अप्रोच : कल्चरल रूप से रिलेवेंट टीचिंग के लिए फॉर्मल लिटरेसी को इनफॉर्मल लोकल नॉलेज के साथ मिलाएं।
- लाइफ्लॉन्ग लर्निंग को बढ़ावा दें : स्कूल के सिलेबस को एडल्ट एजुकेशन और वोकेशनल ट्रेनिंग से जोड़ें।

### 4. परिवार (प्राथमिक एजेंसी)

भूमिका और प्रभाव

- परिवार बच्चे का पहला स्कूल और सबसे ताकतवर सोशलाइज़र होता है। जन्म से पहले के स्टेज से लेकर टीनेज तक, परिवार भाषा, वैल्यू, नज़रिया, बेसिक आदतें, सेल्फ-कॉन्सेट और इमोशनल सिक्योरिटी को आकार देता है। माता-पिता (या प्राइमरी केयरगिवर) व्यवहार का मॉडल बनाते हैं, रूटीन बनाते हैं, स्टिम्युलेशन देते हैं, उम्मीदें तय करते हैं, और रिसोर्स (किताबें, खिलौने, न्यूट्रिशन) को कंट्रोल करते हैं। जन्म का क्रम, सोशियो-इकोनॉमिक स्टेटस (SES), माता-पिता की पढ़ाई, और पेरेंटिंग स्टाइल पढ़ाई के नतीजों पर काफी असर डालते हैं।

कार्य

- इमोशनल सिक्योरिटी और अटैचमेंट जो एक्सप्लोर करने और सीखने में मदद करता है।
- बातचीत, पढ़ने और खेल के ज़रिए भाषा और कॉम्प्रिटिव स्टिम्युलेशन।
- वैल्यू ट्रांसमिशन : अनुशासन, काम करने का तरीका, सामाजिक नियम।
- मटीरियल सपोर्ट : न्यूट्रिशन, हेल्थ केयर, लर्निंग मटीरियल।
- गाइडेंस और एस्प्रिरेशन : स्कूलिंग, करियर, सीखने के नज़रिए के बारे में उम्मीदें।

ताकत

- लगातार, पर्सनलाइज़्ड, इमोशनली अटैच सपोर्ट।
- बच्चे के स्वभाव और ज़रूरतों की गहरी जानकारी।
- कल्चरल कंटिन्यूटी - लोकल वैल्यूज़ और प्रैक्टिस को आगे बढ़ाना।

सीमाएँ / जोखिम

- अलग-अलग रिसोर्स: कम SES वाले परिवारों के पास किताबें, जगह या समय की कमी हो सकती है।
- माता-पिता की पढ़ाई-लिखाई और पढ़ाई का लेवल घर पर सीखने की क्वालिटी पर बहुत असर डालता है।
- परिवार का तनावपूर्ण माहौल (झगड़ा, बुरा बर्ताव, नज़रअंदाज़) सीखने की क्षमता पर असर डालता है।
- कल्चरल रीति-रिवाज जो लड़कियों या पिछड़े ग्रुप्स को स्कूल जाने से रोकते हैं।

शिक्षकों के लिए व्यावहारिक निहितार्थ

- घर-स्कूल पार्टनरशिप बनाएँ: रेगुलर बातचीत, पेरेंट मीटिंग, घर पर आसान एक्टिविटी।
- कम पढ़े-लिखे माता-पिता के लिए लिटरेसी किट और गाइडेंस देना।
- ऐसा होमवर्क डिज़ाइन करें जो घर पर काम आ सके - कोई महंगा सामान नहीं।
- परिवार की जानकारी को करिकुलम इनपुट (स्थानीय कहानियाँ, क्राफ्ट) के तौर पर इस्तेमाल करें।
- माता-पिता को स्पेशल ज़रूरतों वाले बच्चों के लिए शुरुआती पढ़ाई, भाषा को बढ़ावा देने और रूटीन में मदद करने के लिए ट्रेन करें।

### 5. स्कूल (औपचारिक एजेंसी)

प्रकृति और मुख्य कार्य

- स्कूल ट्रेंड टीचर, करिकुलम, शेड्यूल, पढ़ाने के तरीकों, असेसमेंट सिस्टम और साथियों के ग्रुप के साथ सीखने को ऑर्गनाइज़ करता है। स्कूल कॉम्प्रिटिव स्किल (पढ़ना, नंबर समझना), सोशलाइज़ेशन (नियम, सहयोग), और सिलेक्शन (सर्टिफ़िकेशन, प्रोग्रेस) के लिए ज़िम्मेदार है। इसके पास सीखने को सर्टिफाई करने का खास अधिकार है।

ताकत

- स्टूचर्ड लर्निंग सीकेंस और असेसमेंट।
- प्रोफेशनल टीचर और स्पेशल रिसोर्स (लैबोरेटरी, लाइब्रेरी)।
- सोशल लर्निंग के लिए पीयर ग्रुप कॉन्टेक्ट।
- इंटरवेंशन को स्केल करने की क्षमता (रिमेडियल क्लास, स्पेशल एजुकेटर, रिसोर्स रूम)।
- लेजिटिमेसी और सरकारी मदद और प्रोग्राम तक पहुंच।

## सीमाएँ

- एक ही तरह का करिकुलम अलग-अलग तरह के सीखने वालों को अलग-थलग कर सकता है।
- बड़ी क्लास होने से हर एक का ध्यान कम हो जाता है।
- रटने वाले/टीचर-सेंटर्ड तरीके (जहां आम हैं) क्रिटिकल थिंकिंग में रुकावट डालते हैं।
- दिव्यांग बच्चों के लिए शारीरिक पहुंच में दिक्कत और रहने की जगह की कमी।
- स्कूल का कल्चर धीरे सीखने वालों को बदनाम कर सकता है।

## स्कूलों की समावेशी ज़िम्मेदारियाँ

- अलग-अलग तरह के इंस्ट्रक्शन और यूनिवर्सल डिज़ाइन फॉर लर्निंग (UDL) को लागू करना।
- रिकॉर्ड रखें और सीखने में आने वाली मुश्किलों को स्क्रीन करें; रेफरल शुरू करें।
- रेमेडियल टीचिंग और इंडिविजुअल एजुकेशन प्लान (IEPs) दें।
- फिजिकल एक्सेस और सही रहने की जगह पक्का करें।
- टीचर्स को स्पेशल पेडागॉजी और बिहेवियर मैनेजमेंट में ट्रेन करें।

## शिक्षकों के लिए व्यावहारिक मार्गदर्शन

- फॉर्मेटिव असेसमेंट और छोटे ग्रुप में पढ़ाने का इस्तेमाल करें।
- पीयर ट्यूटोरिंग और कोऑपरेटिव लर्निंग का आयोजन करें।
- माता-पिता और बच्चों के लिए स्कूल का अच्छा माहौल बनाना।
- इनकलूजन को सपोर्ट करने के लिए कम्युनिटी वॉलंटियर्स और पैराप्रोफेशनल्स का इस्तेमाल करें।

## 6. समुदाय (स्थानीय समाज, NGO, धार्मिक समूह, स्वयं सहायता समूह)

### भूमिका और दायरा

- कम्युनिटी एजेसियां बच्चे के घर और स्कूल के बीच की दूरी को कम करती हैं और सीखने के दूसरे मौके और सोशल सपोर्ट देती हैं। इनमें लोकल NGOs, कम्युनिटी सेंटर, धार्मिक संस्थाएं, यूथ क्लब, लाइब्रेरी और सेल्फ-हेल्प ग्रुप शामिल हैं। कम्युनिटी रिसोर्स जुटा सकती हैं, जरूरी जानकारी दे सकती हैं, और नॉन-फॉर्मल एजुकेशन इनिशिएटिव (स्कूल के बाद के प्रोग्राम, रिमेडियल क्लास, रोजी-रोटी की ट्रेनिंग) चला सकती हैं।

### ताकत

- कल्चरल महत्व - लोकल ज़रूरतों और भाषाओं पर आधारित प्रोग्राम।
- स्कूल न जाने वाले बच्चों और बड़े सीखने वालों तक पहुंचने में आसानी।
- वॉलंटियर्स, लोकल एक्सपर्टीज़ और समाज-सेवी रिसोर्सों को जुटाने की क्षमता।
- जल्दी से ढलने की क्षमता (जैसे, आपदा से निपटने, इमरजेंसी की जानकारी)।

## सीमाएँ

- बदलती कालिटी और सस्टेनेबिलिटी - फंडिंग और वॉलंटियर्स पर निर्भरता।
- फ्रैगमेंटेशन - फॉर्मल एजुकेशन सिस्टम के साथ कोऑर्डिनेशन की कमी।
- अगर ध्यान से मैनेज न किया जाए तो कल्चरल या धार्मिक भेदभाव की संभावना।

## स्कूलों के लिए व्यावहारिक उपयोग

- सुधार वाली शिक्षा, सबको साथ लेकर चलने वाले रिसोर्स, टीचर ट्रेनिंग के लिए NGOs के साथ मिलकर काम करें।
- कम्युनिटी के बुजुर्गों को लोकल नॉलेज के रिपॉजिटरी के तौर पर इस्तेमाल करें-करिकुलम में शामिल करें।
- स्कूल में अटेंडेंस और इंफ्रास्ट्रक्चर के रखरखाव के लिए कम्युनिटी मॉनिटरिंग को मोबाइलाइज़ करें।
- भरोसा मजबूत करने के लिए मिलकर इवेंट (हेल्प कैंप, लिटरेसी ड्राइव) करें।

## 7. मीडिया और सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) - उभरती एजेंसी

### दायरा

- मास मीडिया (रेडियो, टेलीविज़न, अखबार), और ICT (इंटरनेट, मोबाइल ऐप, ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म, सोशल मीडिया) ताकतवर एजुकेशनल एजेंसी बन गए हैं। वे बड़ी पहुंच, मल्टीमीडिया कंटेंट और अपनी रफ़तार से सीखने के मौके देते हैं।

### शैक्षिक क्षमताएँ

- स्केल : रेडियो/TV लेसन के जरिए दूर से सीखने वालों तक पहुँचें।
- मल्टीमोड़लिटी : अलग-अलग तरह के सीखने वालों की मदद के लिए ऑडियो, वीडियो, टेक्स्ट और इंटरैक्टिव एलिमेंट्स को मिलाएं।
- पर्सनलाइजेशन : अडैटिव लर्निंग प्लेटफॉर्म मुश्किल को अपने हिसाब से बना सकते हैं।
- लाइफ्लॉन्ग लर्निंग : MOOCs, ऑनलाइन वोकेशनल कोर्स और डिजिटल लाइब्रेरी।
- पेरेंटल सपोर्ट : पेरेंटिंग पोर्टल और अर्ली-लर्निंग ऐप्स।

## सीमाएँ और जोखिम

- डिजिटल डिवाइड: SES, भूगोल और विकलांगता के आधार पर असमान पहुंच।
- कालिटी कंट्रोल: सभी ऑनलाइन कंटेंट पढ़ने के हिसाब से सही नहीं होते।
- स्क्रीन टाइम की विंता और ध्यान का बँटवारा।
- देखने/सुनने में दिक्कत वाले बच्चों के लिए एक्सेस में रुकावटें, जब तक कि कंटेंट को बदला न जाए।

## व्यावहारिक कक्षा रणनीतियाँ

- करिकुलम के हिसाब से हाई-कालिटी मल्टीमीडिया रिसोर्स तैयार करना।
- कम रिसोर्स वाली जगहों पर पढ़ाने के लिए रेडियो/TV रिसोर्स का इस्तेमाल करें।
- डिजिटल लिटरेसी और सुरक्षित ऑनलाइन व्यवहार सिखाएं।
- एडटेक को ह्यूमन फैसिलिटेशन-ब्लॉडेड लर्निंग के साथ मिलाएं।
- एक्सेसिबिलिटी पक्का करें (कैप्शन, ऑल्ट टेक्स्ट, बड़े फॉन्ट)।

## 8. कार्यस्थल और व्यावसायिक एजेंसियाँ

- अप्रेटिसशिप, इंडस्ट्री पार्टनरशिप, वोकेशनल ट्रेनिंग सेंटर और ऑन-द-जॉब लर्निंग किशोरों को काम के लिए तैयार करने के लिए बहुत ज़रूरी हैं। ये एजेंसियां स्किल ट्रेनिंग, असल दुनिया की प्रॉब्लम सॉल्विंग और एम्प्लॉयबिलिटी स्किल्स देती हैं।

## स्कूलों को जो लिंकेज बनाने चाहिए

- इंटर्नशिप और इंडस्ट्री विज़िट।
- वोकेशनल ट्रेनिंग इंस्टिट्यूट (IAI, स्किल काउंसिल) के साथ सहयोग।
- करियर काउंसलिंग और सॉफ्ट स्किल वर्कशॉप।

## 9. धार्मिक और सांस्कृतिक संस्थान

- मंदिर, मस्जिद, चर्च, गुरुकुल और कल्वरल सेंटर वैल्यू, रीति-रिवाज, भाषा और पहचान देते हैं। वे वैल्यू एजुकेशन, नैतिक विकास और कम्युनिटी को एकजुट करने में सपोर्टिंग पार्टनर हो सकते हैं - लेकिन टीचरों को स्कूल के माहौल में सेक्युलर, सबको साथ लेकर चलने वाला इंटीग्रेशन पक्का करना चाहिए।

## 10. ताकत, कमज़ोरी और एजेंसियों के बीच बातचीत

### ताकत

- **पूरकता** : एजेंसियां एक-दूसरे की पूरक होती हैं (परिवार इमोशनल सपोर्ट देता है; स्कूल ज्ञान को स्ट्रक्चर करता है; समुदाय कॉन्ट्रेक्ट देता है; मीडिया कंटेंट को स्केल करता है)।
- **रिडंडेंसी** : कई सोर्स अलग-अलग कॉन्ट्रेक्ट के ज़रिए सीखने को मज़बूत करते हैं।
- **फ्लेक्सिबिलिटी** : नॉन-फॉर्मल और इनफॉर्मल एजेंसियां पिछड़े स्टूडेंट्स तक पहुंचती हैं।

### कमज़ोरियों

- **तालमेल की कमी** : अलग-अलग कोशिशों से असर कम होता है।
- **क्लाइटी में अंतर** : NGOs, ऑनलाइन रिसोर्स की क्लाइटी में बहुत अंतर होता है।
- **असमानता** : SES और भूगोल एजेंसियों तक पहुंच तय करते हैं (डिजिटल डिवाइड, रिसोर्स गैप)।

### अंतर-एजेंसी संपर्क (सर्वोत्तम अभ्यास)

**स्कूल-कम्युनिटी पार्टनरशिप बनाएँ** : जॉइंट प्लानिंग, शेयर्ड रिसोर्स, कम्युनिटी मॉनिटरिंग।

**घर-स्कूल कम्युनिकेशन सिस्टम बनाएँ** : रेगुलर रिपोर्ट, फोन कॉल, आसान एक्टिविटी शीट।

- माता-पिता की शिक्षा और बच्चों की पढ़ाई के लिए मीडिया का इस्तेमाल करें; ब्रॉडकास्टिंग को स्कूल के करिकुलम के साथ कोऑर्डिनेट करें।
- ट्रांजिशन पाथवे के लिए नॉन-फॉर्मल वोकेशनल प्रोग्राम को स्कूल सर्टिफिकेट से जोड़ें।

## 11. एजेंसियां और समावेशी शिक्षा: विशेष विचार

**स्पेशल ज़रूरतों वाले बच्चों के लिए एजेंसी कोऑर्डिनेशन ज़रूरी है।**

- **परिवार** : घर पर थेरेपी जारी रखने और IEP लक्ष्यों को सपोर्ट करने के लिए ट्रेंड।
- **स्कूल** : उन्हें सही सुविधाएँ, रिसोर्स टीचर और आसानी से मिलने वाला लर्निंग मटीरियल देना होगा।
- **कम्युनिटी और NGOs** : असिस्टिव डिवाइस, थेरेपी सेशन और रोज़ी-रोटी के लिंक दे सकते हैं।
- **मीडिया और ICT** : आसान कंटेंट (ऑडियो बुक्स, साइन लैंग्वेज वीडियो) दे सकते हैं; अडैप्टिव टेक सीखने में मदद करती है।
- **हेल्प और सोशल सर्विसेज** : (बड़े एजेंसी नेटवर्क का हिस्सा) मेडिकल मदद और रिहैबिलिटेशन देते हैं।
- **टीचर्स को केस मैनेजर के तौर पर काम करना चाहिए** - इन एजेंसियों के बीच कोऑर्डिनेट करना, प्रोग्रेस को डॉक्यूमेंट करना, और रिसोर्स के लिए वकालत करना।

## 12. पॉलिसी और सिस्टमिक इंटरवेशन (प्रैक्टिकल, टीचर-ओरिएंटेड)

हालांकि पॉलिसी की डिटेल दूसरे चैप्टर में है, लेकिन टीचर्स को यह जानना ज़रूरी है कि एजेंसी की ताकत को कैसे इस्तेमाल किया जाए:

- **लोकल एजेंसियों की मैपिंग** : लोकल NGOs, हेत्य सेंटर्स, लाइब्रेरीज़ और वोकेशनल टेनर्स की एक आसान डायरेक्टरी बनाएं।
- **रेफरल के तरीके** : हेत्य, स्पेशल एजुकेटर और सोशल सर्विस रेफरल के लिए स्टैंडर्ड प्रोसेस।
- **पेरेंट एजुकेशन प्रोग्राम** : शुरुआती पढ़ाई-लिखाई, न्यूट्रिशन और सबको साथ लेकर चलने वाली पेरेंटिंग पर छोटे सेशन।
- **कम्युनिटी की भागीदारी** : स्कूल मैनेजमेंट कमेटियों में कम्युनिटी के प्रतिनिधि शामिल होने चाहिए।
- **मीडिया इस्तेमाल का प्लान** : तय मल्टीमीडिया लेसन, माता-पिता के लिए रेडियो स्पॉट, मोबाइल SMS रिमाइंडर।

## 13. एजेंसियों का फ़ायदा उठाने के लिए टीचरों के लिए प्रैक्टिकल चेकलिस्ट

- टॉप तीन कम्युनिटी ऑर्गनाइज़ेशन और कॉन्टैक्ट पर्सन की पहचान करें।
- हर महीने पेरेंट-टीचर सेशन ऑर्गनाइज़ करें जिसमें घर पर करने लायक एक्टिविटीज़ हों।
- अपने सिलेबस के हिसाब से 5 कालिटी ऑडियो/वीडियो रिसोर्स चुनें।
- कम रिसोर्स वाले परिवारों के लिए बिना बिजली या इंटरनेट की ज़रूरत वाला होम-लर्निंग पैक बनाएं।
- स्पेशल सर्विसेज़ के लिए एक रेफरल नोट और सहमति फ़ार्म बनाएं।
- स्कूल के बाद सुधार के सेशन के लिए कम्युनिटी वॉलंटियर्स को शेड्यूल करें।
- इंटर-एजेंसी कानूनैक्ट्स और नतीजों का एक लॉग बनाए रखें।

## 14. निष्कर्ष

- एजुकेशनल एजेंसियां - फॉर्मल, नॉन-फॉर्मल और इनफॉर्मल - सीखने के एक-दूसरे को मज़बूत करने वाले पिलर हैं। एक टीचर का रोल क्लासरूम में पढ़ाने से कहीं ज्यादा है: इसमें परिवार का सपोर्ट जुटाना, कम्युनिटी और मीडिया के साथ पार्टनरशिप करना, और नॉन-फॉर्मल मौकों को एक सही सीखने के रास्ते में शामिल करना शामिल है। सबको साथ लेकर चलने वाली, बराबरी वाली शिक्षा के लिए, एजेंसियों को सोच-समझकर कोऑर्डिनेट किया जाना चाहिए, कालिटी पक्की होनी चाहिए, और लोकल असलियत के हिसाब से ढलना चाहिए। जो टीचर इन एजेंसियों को समझते हैं और उनका फ़ायदा उठाते हैं, वे सीखने को बढ़ाते हैं, भेदभाव कम करते हैं, और शिक्षा को एक बेकार, अलग-थलग इंस्टीट्यूशन के बजाय एक जीता-जागता, कम्युनिटी का अनुभव बनाते हैं।

## शिक्षा के कार्य (सामाजिक, सांस्कृतिक, नैतिक, राजनीतिक, आर्थिक) और सामाजिक परिवर्तन के साधन के रूप में शिक्षा

### 1. परिचय - शिक्षा के कार्य क्यों मायने रखते हैं

शिक्षा सिर्फ़ ज्ञान पाने का प्रोसेस नहीं है; यह एक ताकतवर सामाजिक संस्था है जो लोगों और समाज के ज़िंदा रहने, स्थिरता और तरक्की के लिए ज़रूरी कई काम करती है। शिक्षा के काम इन चीज़ों तक फैले हुए हैं:

- समाजीकरण
- सांस्कृतिक संचरण
- आर्थिक विकास
- राजनीतिक विकास
- राष्ट्रीय एकीकरण
- आधुनिकीकरण
- सामाजिक गतिशीलता
- नैतिक विकास

इन कामों को समझने से शिक्षकों को पढ़ाने के तरीके को समाज के बड़े लक्ष्यों के साथ जोड़ने और शिक्षा की बदलाव लाने वाली ताकत को पहचानने में मदद मिलती है, खासकर भारत जैसे उभरते समाजों में।

### 2. शिक्षा के कार्यों का व्यापक वर्गीकरण

शिक्षा तीन तरह के काम करती है:

1. **व्यक्तिगत कार्य**
  - पसन्निलिटी, वैल्यूज़, काबिलियत और पहचान का डेवलपमेंट।
2. **सामाजिक और सांस्कृतिक समारोह**
  - संस्कृति, नियम, सामाजिक व्यवस्था और मेलजोल का प्रसार।
3. **राष्ट्रीय एवं वैश्विक कार्य**
  - राष्ट्र-निर्माण, आर्थिक विकास, आधुनिकीकरण, लोकतात्रिक नागरिकता।
  - आइए हर एक को गहराई से देखें।
3. **शिक्षा के सामाजिक कार्य**
  - शिक्षा असल में एक सोशलाइज़िंग एजेंसी है। यह लोगों को नॉर्म्स, वैल्यूज़ और बिहेवियर सिखाकर समाज में रहने के लिए तैयार करती है।

### 3.1 समाजीकरण

शिक्षा बच्चों को सिखाती है:

- भाषा
- सामाजिक मानदंड
- नियम
- सहयोग
- स्वीकार्य व्यवहार
- समूह में रहना

टीचर, साथियों और स्कूल कल्चर के ज़रिए बच्चे समाज की उम्मीदों के हिसाब से ढलना सीखते हैं।

### 3.2 सामाजिक नियंत्रण और सामाजिक व्यवस्था

- स्कूल नियम, डिसिप्लिन सिस्टम, उम्मीद के मुताबिक व्यवहार के तरीके और शेयर्ड वैल्यू बनाते हैं। ये सोशल ऑर्डर बनाए रखने और गलत कामों को रोकने में मदद करते हैं।

तंत्र:

- शैक्ष्यूल और रूटीन
- पुरस्कार-दंड प्रणालियाँ
- स्कूल के नियम
- मूल्य शिक्षा

इनडायरेक्टली, इससे डिसिप्लिन नागरिक बनते हैं।

### 3.3 सामाजिक सामंजस्य और एकता

अलग-अलग जाति, धर्म, भाषा और क्लास के लोग एक साथ बैठते हैं, एक साथ पढ़ते हैं और सहयोग करते हैं। इससे ये बनता है:

- सामान्य पहचान
- साझा अनुभव
- सहनशीलता और सम्मान
- राष्ट्रीय एकता

भारत जैसे अलग-अलग तरह के देश में यह बात खास तौर पर ज़रूरी है।

### 3.4 सामाजिक गतिशीलता

- शिक्षा लोगों को निचले स्तर से ऊँचे सामाजिक और आर्थिक पदों तक पहुँचने में मदद करती है।
- यह पीढ़ियों से चली आ रही गरीबी की चेन को तोड़ती है।

उदाहरण:

- पहली पीढ़ी के शिक्षार्थी
- वंचित समूहों के लिए छात्रवृत्ति
- वोकेशनल ट्रेनिंग से रोज़गार मिलता है

इस प्रकार, शिक्षा सामाजिक न्याय का एक साधन है।

### 3.5 सामाजिक परिवर्तन और आधुनिकीकरण

शिक्षा बढ़ावा देती है:

- तर्कसंगत सोच
- वैज्ञानिक दृष्टिकोण
- तकनीकी कौशल
- लोकतात्रिक मूल्य
- लैंगिक समानता
- आलोचनात्मक प्रश्न

यह पुरानी परंपराओं की जगह मॉडर्न नज़रिए को लाता है।

### 3.6 सामाजिक मूल्यों का संरक्षण और संचरण

स्कूल सिखाते हैं:

- ईमानदारी
- सहयोग
- सम्मान
- ज़िम्मेदारी
- समय की पाबंदी
- सहानुभूति
- टीमवर्क

ये वैल्यूज़ अच्छे से समाज में काम करने के लिए ज़रूरी हैं।